Date: / /

ग्रामीण स्त्रियों द्वारा सम्पन्न कार्य.

ग्रामीण स्त्रियों द्वारा किए जाने वाले कार्यों को निम्नलिखित 4 वर्गों में बाँटा जाता है। जिनका वर्णन इस प्रकार है-

1- भूमि से सम्बन्धित कार्य →

भूमि से सम्बन्धित कार्यों में मुख्य स्थान कृषि कार्य का होता है। इन कार्यों में पुरुष अधिक श्रम वाला काम करते है। जैसे- हल चलाना, मिट्टी तोड़ना क्यारियाँ बनाना, पानी से सिंचाई करना आदि क्योंकि शारीरिक स्तर पर स्त्रियों की तुलना में वे अधिक बलिष्ठ होता है। कृषि - कार्यों में स्त्रियाँ की पीछे नहीं रहती।

जीव - जन्तुओं से सम्बन्धित कार्य -

मानव समुदाय जहाँ प्रकृति की वनस्पतियों से जुड़ा है वही अनेक जीव - जन्तुओं से भी उसके जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध है। अपने आहार एवं वस्त्रों के लिए उसे प्राणियों पर निर्भर रहना पड़ता है

दुधारू पशु - पालन →

दूध की प्राप्ति के लिए गाय, भैंस, बकरी, भेड़ इत्यादि पशुओं को घरेलू पशु के रूप में पाला जाता है

II

Date: 13/2/22

मुर्गी-पालन →

ग्रामों मे मुर्गियों दो उद्देश्य से पाली जाती हैं। एक, मांस की प्राप्ति के लिए तथा दूसरे अंडो की प्राप्ति के लिए ~~मुर्गि~~ मुर्गियों के निमित रहने के स्थान का निर्माण तथा चारे का प्रबन्ध तो पुरुष करते हैं किन्तु दाना-पानी देने का कार्य स्त्रियां करती है।

रेशम के कीड़े पालना →

जिन देशो मे शहतूत के पेड़ आसानी से उगाये जा सकते है वहाँ उन पेड़ों पर रेशम के कीड़ों का पालन किया जाता है इस कीड़ो की तितलियाँ शहतूत के पेड़ों पर अण्डे देती हैं।

इन अण्डों से इल्लियाँ निकलकर भरपेट पत्तियाँ खाती है तथा अपनी लार को शरीर पर लपेटती हैं यही लार सूखकर रेशम का तार बन जाती है। तथा रेशमी तारों में लिपटी इल्ली ककून कहलाती है। रेशम के कीड़े पालने, ~~कत्ना~~ ककून करल करने तथा रेशम उद्योग को चलाने का कार्य स्त्रियाँ भी कुशलतापूर्वक करती है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया